12.12.18 (M)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 7513 IC

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल-छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

munotes.in

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,

प्रियतम को, प्राणों के पण में,

हमीं भेज देती हैं रण में,-

क्षात्र धर्म के नाते।

सखी, वे मुझसे कहकर जाते

अथवा

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,
श्याम तृण पर बैठने को, निरुपमा।
बह रही है हृदय पर केवल अमा,
मैं अलक्षित हूँ, यही
कब कह गया है। (8)

(ख) मित्रता बड़ा अनमोल रतना कब इसे तोल सकता है धन।
धरती की तो है क्या बिसात, आ जाए अगर बैकुण्ठ हाथ,
उसको भी न्यौछावर कर दूँ, कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

अथवा

यह सुख कैसा शासन का ?
शासन रे मानव मन का !
गिरी-भार बना-सा तिनका,
यह घटाटोप दो दिन का-
फिर रवि-शशि-किरणों का प्रसंग !
जलता है यह जीवन - पतंग ! (7)

2. 'यशोधरा' के विरह-वर्णन पर विचार कीजिए।

अथवा

यशोधरा की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (12)

3. 'अशोक की चिन्ता' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

munotes.in

अथवा

जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए। (12)

4. पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं के आधार पर निराला की सामाजिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

निराला की काव्यभाषा का विवेचन कीजिए। (12)

5. दिनकर ओज, औदात्य एवं वीर रस के कवि हैं। विचार कीजिए।

अथवा

सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (12)

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए :

जलने को ही स्नेह बना। (निर्देश-प्रेम-पीड़ा)
उठने को ही वाष्प बना है,
गिरने को ही मेह बना।
जलता स्नेह जलावेगा ही,
फोले वाष्प फलावेगा ही,
मिट्टी मेह गलावेगा ही,
सब सहने को देह बना !
जलने को ही स्नेह बना !

अथवा

मुक्ति जल की वह शीतल बाढ़, जगत की ज्वाला करती शांत।

(निर्देश–बौद्ध दर्शन)

तिमिर का हरने को दुख भार, तेज अमिताभ अलौकिक कांत।
देव कर से पीड़ित्र विक्षुब्ध, प्राणियों से कह उठा पुकार–
तोड़ सकते हो तुम भव-बंध, तुम्हें है यह पूरा अधिकार।

अथवा

वीरों का कैसा हो बसंत ? (निर्देश–भाव सौन्दर्य)
आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं, दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो बसंत ? (6,6)

munotes.in